

January-February-March - 2024

E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's
RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Vol. 11, ISSUE : 01

Multidisciplinary Issue



Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] India.

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Smt. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Swati Lawange, Yeola (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN **P**UBLICATIONS



INDEX

| No. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|------------------------|---|--|----------|
| English Section | | | |
| 1 | A Comparative Analysis of the Influence of Rabindranath Tagore and R.K. Narayan on Indian English Literature | Prof. Dilip Kute | 05 |
| 2 | Empowerment of Women In Buddhism | Dr.Pranoti Kamble | 14 |
| 3 | A Study of the Nature of Oral Communication | Dr.Kishore Nikam | 17 |
| 4 | Role of Education in Tribal Women Empowerment | Dr. Sangita Hadge | 19 |
| 5 | Challenges Before India's Public Healthcare System | Dr. Manjusha Kharole | 21 |
| 6 | Assessment of Banana Crop Concentration in North East Part of Jalgaon District, (MS) | Dr. Gulab Tadvi | 24 |
| 7 | Enhancing Customer Relationships in the Indian Banking Sector: A Comprehensive Analysis of CRM Strategies | Smt. Shashwati Nirbhavane | 29 |
| 8 | Impact of Globalisation on Urban Poverty | Dr. Dipak Baviskar, Dr.Dnyaneshwar Bhamare | 35 |
| 9 | Assessment of Decadal Growth Rate in Rural Population of Jalgaon District (1961-2021) | Mr. Avinash Salunkhe, Dr S. N. Bharambe | 40 |
| 10 | Small Business, Big Impact: Analyzing the Role of Indian Government Programs in Nurturing Small Entrepreneurs | Dr. Pratap Phalphale, Mr. Saurabh Shinde | 47 |
| 11 | A Study of Factors Influencing Employees Performance | Dr. Mahesh Auti | 53 |
| 12 | Academic Libraries in India Present and Future: An Overview | Dr. Subhash Ahire | 63 |
| 13 | A Systematic Literature Review of Librarians' Approach Towards Life-Long Learning | Mrs. Manisha Tandale | 71 |
| 14 | Cycling: Knee Pain and Rehabilitation | Dr.Lahanu Jadhav | 77 |
| 15 | Importance of Pedro Alvares Cabral's Voyage Towards India (1500-1501 Ad) | Dr. P. S. Preamsagar | 81 |
| हिंदी विभाग | | | |
| 16 | कृषि क्रांतिका दस्तावेज- 'परती-परिकथा' | डॉ. ईश्वर ठाकुर | 85 |
| 17 | डॉ.रामदरश मिश्र के उपन्यासों के प्रतिनिधि स्त्री पात्रों का परिचय | प्रा.जयवंत गांगुर्डे | 88 |
| 18 | दुष्यंतकुमार की गजलों में सामाजिक बोध ('साथे में धूप' के विशेष संदर्भ में) | प्रा. हर्षल बच्छाव, डॉ. अनिता नेरे (भामरे) | 92 |
| 19 | इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में नारी जीवन | डॉ.व्ही.डी.सूर्यवंशी | 95 |
| 20 | नर - नारी संबंध आधुनिक संदर्भ में: चित्तकोवरा | प्रा.हिरा पोटकुले, डॉ.रजनी शिखरे | 98 |
| 21 | शिक्षा : भारतीय शिक्षा | डॉ. पंकजकुमार पांडे | 101 |
| 22 | मन्नू भंडारी की कहानियों में जीवनमूल्य | प्रा. हर्षल बच्छाव, डॉ. अनिता नेरे (भामरे) | 106 |
| मराठी विभाग | | | |
| 23 | कोकणी आदिवासी बोलीभाषा | डॉ. सुलतान पवार | 109 |
| 24 | वारकरी संतांची कीर्तन परंपरा | दत्तात्रय फटांगडे | 114 |
| 25 | महात्मा फुले आणि धर्म | डॉ. शिवाजी एंडाईत | 120 |
| 26 | पुरोगामी पंडित: तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी | चंद्रप्रकाश कांबळे | 126 |

हिंदी साहित्य विविध विमर्श

संपादक:
प्रा. रवीन्द्र ठाकरे
डॉ. रघुनाथ वाकले



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
बी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
फोन: 08527460252, 09990236819
ईमेल: jspublications@gmail.com

हिंदी साहित्य विविध विमर्श

| | | | |
|-----|---|--|-----|
| | | डॉ. नावासाहेब शेख | |
| 30. | किसान विमर्श समस्या और समाधान | संदिप नानुनाथ पोखरे डॉ. न्ही डी पूर्ववंगी | 238 |
| 31. | भारतीय किसानों के लिए महात्मा फुले का संघर्ष : एक समीक्षा | डॉ. मालती सानगर | 244 |
| 32. | आधुनिक हिन्दी कविता में पर्यावरण विमर्श | प्रवेश कुमार त्रिपाठी | 249 |
| 33. | समाज और पर्यावरणीय जागरूकता | दत्तात्रय किटाले | 258 |
| 34. | 'डूब' और 'बलचनमा' उपन्यास में किसानों की यथार्थ जीवन गाथा | डॉ. रघुनाथ नामदेव वाकळे | 263 |
| 35. | डॉ. शिव शंकर कटारे के काव्य में वृद्ध विमर्श | प्रवीण कटारे | 273 |
| 36. | 'अपने अपने आसमान' का सच | डॉ. गणेश शेकोकर | 281 |
| 37. | पर्यावरण विमर्श और साहित्य का योगदान | डॉ. स्मृति नरेश चौधरी | 286 |
| 38. | 'फाँस' उपन्यास में कृषक विमर्श | प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे | 292 |
| 39. | इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में किसान जीवन की समस्याओं का चित्रण | धनंजय सहादु कामोदकर डॉ. शैलजा जायसवाल | 298 |
| 40. | 21वीं सदी के उपन्यासों में किसान विमर्श | डॉ. संदीप बलवंत देवरे | 304 |
| 41. | डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यास सूखता हुआ तालाब और आकाश की छत में पर्यावरण विमर्श | डॉ. गीता परमार | 310 |

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh

A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly E-
Research Journal

जनवरी - मार्च - 2024



<https://shodhutkarsh.com/>

अतिथि संपादक -डॉ. रेणु सिन्हा

त्रैमासिक ऑनलाइन पत्रिका - शोध उत्कर्ष



शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh

A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly Research E-Journal

वर्ष-02 अंक -05 जनवरी - मार्च - 2024

Table of Content Title and Name of Author(s)

Page

S.N.

| S.N. | Title and Name of Author(s) | Page |
|------|--|------|
| | संपादकीयनेनु सिन्हा | |
| 1. | आधुनिक शिक्षा में संवेगात्मक बुद्धि की उपादेयता एक अध्ययन - डॉ. राजकुमारी गोला | 9 |
| 2. | दलित कहानियों में संवेदनात्मक पक्ष, परिवर्तन और दिशा - डॉ. राजकुमारी | 1 |
| 3. | मैं द्रौपदी नहीं हूँ : नारी के अंतःकरण की वेदना - डॉ. प्रवीन कुमार | 1 |
| 4. | भारत राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर युद्ध से होने वाले नुकसान - डॉ. एन.पी.प्रजापति | 1 |
| | 'वसीयत' उपन्यास में अभिव्यक्त वृद्धावास्था जनित अकेलापन, अलगावबोध और स्मृतियाँ - पूजा चादव | 2 |
| 6. | एक महायात्रा : भक्ति से प्रेम तक - सुभाष राय | 2 |
| 7. | छायावादी काव्य जगत में श्री सुमित्रा नन्दन पंत का स्थान - पी.वी.के | 2 |
| 8. | मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री -जीवन के चित्र - डॉ. सारिका देवी | 2 |
| 9. | प्रो. वशिष्ठ द्विवेदी : एक रचनात्मक व्यक्तित्व - सीमांकन यादव | 2 |
| 10. | समाज की रूढ़ी-परम्पराओं, झूठी शान, आडंबरों से परदा उठाती कहानी- 'परदा'- डॉ. प्रमोद पडवळ | 2 |
| 11. | कवि डॉ. वृजेश सिंह की ग़ज़लों में अस्मितामूलक विमर्श - प्रा. रविंद्र पुंजाराम ठाकरे & प्रो. डॉ. अनिता पोपटराव ने | 3 |
| 12. | राजस्थानी लोक नृत्यों में 'ढोल नृत्य'- डॉ. गोविन्द राम | 3 |
| 13. | पंत जी के काव्य में सामाजिक चेतना - डॉ. कृष्ण बिहारी राय | |
| 14. | A Study on the techniques of development of Empathy among the students of Vidya: The living school of Dhemaji, Assam - Schnaz Begum & Protim Gogoi | 34 |
| 15. | Globalization as A key Factor of Global Warming and Environmental Crisis - Barun Das | 37 |
| 16. | संजीव की कहानियों में नारी शोषण के प्रति प्रतिशोध- पी. एम. आर. जयंती | 42 |
| 17. | The Panchatantra text in Ancient India: A Study - Saurabh Shubham | 43 |
| 18. | 'एक औरत एक जिन्दगी' कहानी की विधवा का जीवन- संघर्ष - डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड | 45 |
| | Social stigma and questions of mental health of transgender individuals in India-Dr. Disent Kumar Sahu & Dr. Ravindra Kumar | 46 |
| 20. | भक्ति जागरण में निर्गुण काव्य के प्रवर्तक-संत नामदेव - डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि' | 50 |



International Research Fellows Association's
RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

ISSUE : 336

Multidisciplinary Issue



Chief Editor -
 Dr. Dhanraj T. Dhangar,
 Assst. Prof. (Marathi)
 MGV's Arts & Commerce College,
 Yeola, Dist - Nashik [M.S.] India.

Executive Editors :
 Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
 Dr. Gajanan Wankhede, Klawat (Hindi)
 Smt. Bhurati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
 Dr. Swati Lawange, Yeola (Marathi)
 Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS



'RESEARCH JOURNEY' International E-Research Journal
 Issue 336 : Multidisciplinary Issue
 Peer Reviewed Journal

E-ISSN :
 2348-7143
 February 2024

Impact Factor 6.625

February 2024

E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's
RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue : 336

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
 Dr. Dhanraj T. Dhangar,
 Assst. Prof. (Marathi)
 MGV's Arts & Commerce College,
 Yeola, Dist - Nashik [M.S.] India.

Executive Editors :
 Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
 Dr. Gajanan Wankhede, Klawat (Hindi)
 Smt. Bhurati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
 Dr. Swati Lawange, Yeola (Marathi)
 Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)



INDEX

| No. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|------------------------|---|--|----------|
| English Section | | | |
| 1 | Caves of Maharashtra through the Sight of Later Foreign Travellers | Dr. P. S. Premsagar | 05 |
| 2 | Narrative Art in the Novels of Aravind Adiga | Miss Priyanka Ruikar | 12 |
| 3 | Exploring Cultural Identity and Familial Dynamics in Sudha Murty's 'Dollar Bahu' | Prof. Minakshi Ingole | 16 |
| 4 | Trends in Employment in India Since 2011 | Mr. Kamalesh Raut | 19 |
| 5 | The Role of Social Entrepreneurship in Social Development: A Case Analysis of Dharashiv District | Dr. Vikram Shinde | 24 |
| 6 | Insurgency Issues in the North East Part of India | Dr. Laxman Wagh | 31 |
| 7 | Democracy Identity and Power | Dr. Sunil Pimpale | 37 |
| 8 | Content Analysis of Library Webpage of Maratha Vidya Prasark Samaj's Senior (Granted) Colleges | Mr. Sharad Patil, Dr. Ranjana Jawanjali | 40 |
| 9 | Effect of Yoga and Meditation on Quality of Life among Adolescents | Kishor Ankulanekar, Dr. Dinesh Naik | 52 |
| 10 | The Religious Center- Medieval Burhanpur (With Special Reference to Sūfism) | Dr. P. S. Premsagar | 60 |
| 11 | Climate Change Diplomacy and its Implications for Global Politics | Mr. Saurabh Kolhe | 63 |
| 12 | Impact of Globalization on India's Agriculture | Mr. Olya Irma Vasave | 67 |
| हिंदी विभाग | | | |
| 13 | हिंदी उपन्यासों में धार्मिक विमर्श | डॉ. ज़ही. डी. सूर्यवंशी | 72 |
| 14 | विकलांगता अभिशाप नहीं सकलांगो को चुनौती है | ओमप्रकाश शंकर | 75 |
| मराठी विभाग | | | |
| 15 | संन्यासाज्जीवनमुक्तिरीतिविचारण्यमुनिः | केशवकुमार मन्था, डॉ. सी. कलापिनी अगस्ति | 78 |
| 16 | आदिवासी मौखिक परंपरेतील राम | डॉ. गिरीश गायकवाड | 90 |
| 17 | भागवत संप्रदाय व संत कबीर यांचे दोहे | डॉ. विद्या सुर्वे बोरसे | 95 |
| 18 | प्राचीन भारत देशाचे सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन : एक दृष्टिक्षेप प्रा. जितेंद्र पगार | | 99 |
| 19 | वामन दत्त कर्डक यांचे जीवनकार्य | डॉ. स्वाती वाकोडे | 103 |
| 20 | निगूडा : आदिम माणसाचा संधर्पात्मक जीवनप्रवास | डॉ. सुलतान पवार | 107 |
| 21 | आदिवासी कथात्म साहित्यातील पुरुष व्यक्तिरेखांचा विविधांगी अभ्यास | डॉ. भाऊसाहेब गमे, श्रीमती कौशल्या वागुल | 113 |
| 22 | विशेष कालखंडाचा अभ्यास : संकल्पना आणि स्वरूप | डॉ. प्रकाश शेवाळे | 118 |
| 23 | समकालीन मराठी आत्मचरित्रातील डॉ. वि. भि. कोलते यांच्या 'अजुनि चालतोचि वाट' या आत्मचरित्राचे स्थान, स्वरूप आणि महत्व | प्रा. दिनेश गुजर | 122 |
| 24 | ग्रामीण साहित्य संकल्पना | विनोद भालेराव, डॉ. अशय घोरपडे | 127 |
| 25 | ग्रामीण साहित्यातील स्त्री जीवनाचे बदलते स्वरूप | डॉ. राजू शनवार | 131 |
| 26 | छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज यांचा मानवतावादी दृष्टिकोन | प्रा. युवराज खोत्रागडे | 135 |
| 27 | किरण येले यांच्या 'वाईच्या कविता' : एक स्त्रीवादी आकलन | डॉ. स्वाती लवंगे-सोनवणे | 140 |
| 3 | Website - www.researchjourney.net | Email - researchjourney2014@gmail.com | |



| | | | |
|----|--|------------------------------|-----|
| 28 | प्रसार माध्यमांची सामाजिक बांधिलकी | डॉ. निलिमा कापसे | 146 |
| 29 | भा. रा. भागवत यांचे बालसाहित्यातील योगदान | डॉ. विद्या सुर्वे-बोरसे | 150 |
| 30 | धुळे शहरातील उच्च माध्यमिक विद्यालयातील राष्ट्रीय अयुक्त्या विद्यार्थ्यांचा नेतृत्व गुणांचा अभ्यास | डॉ. मीनाक्षी महाले | 153 |
| 31 | राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांचा व्यक्तिमत्त्व विभाग | डॉ. जयिता भंडारे, किरण शेंडे | 157 |

भैरवी (दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कला की शोध-पत्रिका)

ISSN 0975-5217

UGC-Care list (Group-I)

वर्ष-2023, अंक-26, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन विशेषांक

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) पुष्पम नारायण

प्रकाशक : मिथिलांचल संगीत परिषद्

स्नातकोत्तर संगीत एवं नाट्य विभाग

सतित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

कामेश्वरनगर, दरभंगा 846 004

फोन - 09430063265

ईमेल - npushpamji@gmail.com

मूल्य

इस अंक का मूल्य : 400/- रुपये

व्यक्तियों के लिए :

वार्षिक : 800/- रुपये / त्रैवार्षिक 2400/- रुपये

पंचवार्षिक 4000/- रुपये / आजीवन : 15000/- रुपये

संस्थाओं के लिए :

वार्षिक : 850/- रुपये / त्रैवार्षिक 2500/- रुपये

पंचवार्षिक 4500/- रुपये / आजीवन : 16000/- रुपये

(केवल मनी आर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

(दरभंगा से बाहर के चेक में 10 रुपये अधिक जोड़े)

“भैरवी” विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित एवं UGC-Care list (Group-I) में शामिल है। साथ ही यह Peer Reviewed Refereed Visual and Performing Arts Research Journal है।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सम्पत्ती के उपयोग हेतु लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

प्रकाशित रचनाओं के विचार से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

समस्त विवाद दरभंगा न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, टुनिका सिटी, लान्ही, गाजियाबाद-201 102

- ✓ 38. Indian Sensibility Reflected in Nissim Ezekiel's
Selected Poems: A Study
Sphurti Kaustubh Deshpande, Dr. Bharati Khairnar 251
39. Mysticising the Couplets : Re-Reading Kabir's
Dohas from a Postmodern Perspective
Sweta Shailesh Thakkar, Dr. Mahavir Sankla 257
40. The Anticolonial Traits in Uma in
Amitav Ghosh's The Glass Palace *A A Vakil* 262
41. The Changing Structure of English in Social Media
Mr. K. Kalyanasundaram, Dr. Venkata Ramani Challa 266
42. The Implications of Colloquial Language in
Autobiography: A Review of Bama's Karukku
Dr. Mantha Padmabandhavi Prakashrao 274
43. The Role of Literature in Modern Society
Dr. Santosh Chouthaiwale, Smt. Rupam Ramdas Biniwale 280
44. Characters' Response to Social Ostracism,
Humiliation and Hostility in
Manju Kapur's Brothers *M. Ratna, Dr. M.P. Amuja* 287
45. Predicament of Female Characters in Najubai Gavit's
Aador and Hansda Sowvendra Shekhar's
The Mysterious Ailment of Rupi Baskey :
A Study in Tribal Narratives *Datta Narayan Nawadkar* 293
46. Eco-criticism and its Effect on Indian Writings in English
Mrs. Anupama Kujur Tirkey 297
- ✓ 47. Can Myths In-text be Simplified /Enciphered?
Mr Shivnath A. Takte and Dr Bharati S. Khairnar 302
48. Amitav Ghosh's In An Antique Land:
A Study with Socio-cultural Perspective *Dr. L. G. Bahegavankar* 311
49. The Portrayal of Corrupt Education System
in Chetan Bhagat's Revolution 2020 *Adate Suryakant Shamrao* 316
50. Cli-Fi : The Mirror of Anthropocene Era
Appa Vijayatai Chandrashekhar, Mirgane Vivek Ramarao 323

Indian Sensibility Reflected in Nissim Ezekiel's Selected Poems: A Study

Sphurti Kaustubh Deshpande*, Dr. Bharati Khairnar**

Abstract

This research paper has been drafted to search for the theme of Indian sensibility in Nissim Ezekiel's poems. Nissim Ezekiel was Anglo-Indian but his attachment to India drawn in his poems withdrew his consciousness for India. He uses the English language as a medium to aware of Indian social problems especially before and post-Independent India. As a modern Indian English poet, he criticizes the issues which can degrade the nation. As an Indian, he praises the good things like family bonding, and culture. His poems focus attention on Indian social problems, thinking style, and mindset of Indians in a variety of roles. Social issues like poverty, domination by the British, and cultural impact on behaviour like traditions, superstitions, male domination, and religious concepts are handled in his poems. The themes in his poems express his sensitivity, his nearness, and his eagerness to be Indian through emotions, expressing problems and the mindset of Indian society. The term 'Indian sensibility' is regarding the poet's style of presenting Indian themes. In this research paper, the selected poems have been handled stylistically to highlight Indian sensibility as a theme of the poems.

Semantic features can be observed for the primary aim of exploring linguistic creativity used in Nissim Ezekiel's poems.

Keywords: *Indian sensibility, culture, Indian society, semantics, symbolism, satire*

Introduction

Nissim Ezekiel was one of the great writers and poets of 20th-century Indian English writings. Though he was Anglo-Indian, he was pure Indian

by heart and manner. As a pioneer modern poet in India and a productive writer in poetry, prose, criticism, journalism, and as a playwright, Nissim Ezekiel possessed a high place

Research Scholar, Research Centre: Sangamner Nagarpalika Arts, D. J. Malpani Commerce & B. N. Sarada Science College, Sangamner (MS) INDIA. Mobile No. 9623180464, Email ID: sphurtideshpande12@gmail.com

Research Guide, Associate Professor, M. S. G. College, Malegaon Camp Dist. Nashik (MS) INDIA, Mobile No. 9960651582, Email ID: drkhairnarbharti@gmail.com



A Study of the Nature of Oral Communication

Prof. (Dr.) Kishore R. Nikam

Professor & Research Supervisor,

Department of English,

MGV's Maharaja Sayajirao Gaikwad Arts, Science & Commerce College,

Malegaon Camp, Dist.-Nashik (Maharashtra, India)

(Affiliated to S. P. Pune University, Pune)

Abstract:

Communication is one of the fundamental needs of the civilized man. According to Krishna Mohan and Meera Banerji the word communication is derived from Latin term 'communicare' or 'communico', both of which mean 'to share' (3). Broadly, there are two types of communication- oral and written. In spite of number of means of communication, language is the most widely used instrument. English is the most widely used language in the world. So, in the context of globalization, it is important for the students to learn it for better career opportunities. At many of the places, it has been regularly observed that the students fail in the interviews for lack of good communication skills. Despite having a sound knowledge of the set of skills required for the profession concerned, and also good grades in the statement of marks of the degrees acquired, the student is not able to present it in the desired manner at the time of selection for job. The oral communication is very much important as far as student placement is concerned. It plays a seminal role in getting placed in the good organizations. So, the present study is associated with understanding the nature of English oral communication.

Key words: communication, communicare, communico, globalization, interview, English oral communication

The oral communication involves the exchange of thoughts, ideas, and information between two persons. According to Dr. Nageshwar Rao and Dr. Rajendra P. Das, "In the verbal or oral communication, there are basically two parties and they have some basic roles: those of the speaker and of the listener" (68). The speaker and the listener both have to perform a function in it as per the need of the situation. The speaker encodes the message he/she wants to communicate to the listener. This encoded message includes some kind of information. In the oral communication, this information is communicated through spoken words. For the successful communication of this information, the speaker uses the suprasegmental features such as intonation and stress and the non-verbal signs of communication such as an eye contact, facial expressions, and gestures. After listening to the encoded message, the listener has to decode it with his/her pre-learned knowledge of things in the human world.

In the oral communication, one needs to have the communicative ability of producing meaningful information and receiving it with apt comprehension. As far as the listener and the speaker share some type of information, the context becomes a vital element to share their collective experience, especially to give a specific meaning to the utterances of the speaker and to enable the listener to get the proper meaning of these shared utterances. Without the knowledge of the relevant context in which the speaker is speaking, most of the information shared by him/her does not make proper sense to the listener. So, sharing, implicitly or explicitly, the context by the speaker with the listener is necessary in the oral communication. Apart from producing and receiving the information, processing the knowledge concerned is also one of the important things in the understanding of the received information. For Kramsch, speaking involves "Anticipating the listener's response and possible misunderstanding, clarifying one's

ہے۔ سن رسیدہ منشی طوطا رام ای۔ کم سن لڑکی کی مجبوری کا فائدہ اٹھا کر اسے اپنی بیوی بنا دیا ہے جو عمر میں اس کے بچوں کے۔ ا۔ ہے۔ جہیز کی لعنت کے شکار والدین۔ اپنی لڑکیوں کو عمر رسیدہ شخص سے شادی کر دیتے ہیں تو مستقبل کی پیشانیوں کا نقشہ اس میں دیکھ لیا ہے۔

پیم چند کا ای۔ اور ول جو ہماری گفتگو کا موضوع ہے اس کا م۔ ”گودان“ ہے۔ پیم چند نے اس شاہکار ول کو ۱۹۳۶ء سے ۱۹۳۵ء کے درمیانی عرصے میں لکھا، اور ۱۹۳۶ء میں اس ول کو سرسوتی پبلس نے اسے شائع کیا۔ ول ”گودان“ پیم چند کی دیہاتی زندگی کے تمام عمر کے مطالعے کا نچوڑ ہے جو کسانوں کی بے بسی اور کسمپرسی کی کہانی ہے۔ ہوری پیم چند کی تمناؤں کی محرومیوں کی علامت ہے جو صرف گائے کی تمنا لیے ہوئے اس دور سے رخصت ہو جا رہے۔ اردو اور ہندی کے بیشتر قدین نے گودان کو نہ صرف پیم چند کا بلکہ اردو اور ہندی کا بہترین ول قرار دیا ہے۔ اس ول میں صغیر کے دیہی معاشرے اور اس کے ارموجود کرداروں اور واقعات کی عکس بندی بہت خوبصورتی سے کی گئی ہے۔ سماجی و معاشرتی جبر اور سماجی ہمواری کے رویے بھرپور طور پر اس ول میں دکھائی دیتے ہیں۔ یہ ول ہندوستانی دیہی معاشرے میں جبر اور استبداد کی واضح جھلک دکھاتا ہے۔

پیم چند کے بعد جس ول نگار نے ہمارے ادب میں اپنا نقش چھوڑا ہے اس کا م کرشن چندر ہے کرشن چندر نے یوں تو بہت سے ول لکھے ہماری گفتگو کا موضوع ان کا ول ”شکست“ ہے۔ ول ”شکست“ کرشن چندر کا مشہور ول ہے۔ جس کو انھوں نے محض اکیس دن میں کشمیر میں رہ کر لکھا تھا جو ان کا پہلا ول بھی ہے۔ اس ول میں کشمیر اپنے خوبصورت مناظر کے ساتھ جلوہ ہے۔ ماحول نگاری، بت نگاری اور فطرت نگاری کے سلسلے میں کرشن چندر کا قلم فنکارانہ مہارت دکھاتا ہے۔ اس لحاظ سے کرشن چندر کا فن بے حد پختہ اور دیپ حسن کا حامل ہے، حالانکہ اس ول کا موضوع تقسیم ہند ہے۔ منظر نگاری ”شکست“ کے پورے قصے کو ایسا دل فریب اور رومانی بنا دیتی ہے کہ گویا اس میں قدرت کی بنائی ہوئی زندگی کا رس اور نور بھرا ہوا ہے۔ بلاشبہ شکست کرشن چندر کے سب سے بہترین ولوں میں شمار کیا جاسکتا ہے۔

کرشن چندر کے بعد جس ول نگار کا غلبہ اردو ولوں پر رہا ہے اس کا م قرۃ العین حیدر ہے۔ خیال رہے کہ قرۃ العین حیدر اردو کے ان خوش نصیب افراد میں شمار ہوتی ہیں جنہیں ان پڑھ جیسا وقار اعزاز قرۃ العین حیدر نے اپنے ادبی سفر میں کئی سنگ میل طے کیے۔ کئی ول اور افسانے ان کی دیگار کے طور پر آج بھی اردو ادب میں موجود ہیں لیکن یہاں ان کے شہرہ آفاق ول ”آگ کا دریا“، ”گفتگو مقصود ہے“ قرۃ العین حیدر نے یہ ول 1957ء میں لکھنا شروع کیا تھا اور اس کی اشاعت دو برس بعد ممکن ہوئی۔ دو قومی یے کے حامی ادیبوں اور دوں کے لیے ”آگ کا دریا“ ہمیشہ ایک خوشگوار ادبی واقعہ رہا ہے لیکن اس کے فنی محاسن پر داد و تحسین دینے میں کبھی کوتاہی نہیں تھی گئی۔ موصوف نے یہ ول تیس برس کی عمر میں لکھ ڈالا تھا۔ بہتر سال کی عمر میں۔ خود اس کا انگریزی ترجمہ کیا تو انہیں کردار نگاری اور بعض تفصیلات میں سقم آئے چنانچہ 1998ء میں شائع ہونے والا Fire of River اس ول کا بہتر اور زیادہ موثر روپ قرار دیا جاسکتا ہے اس ول میں ہندوستان کی تقریباً ڈھائی ہزار سالہ تاریخ کو بیان کرنے کی کوشش کی گئی ہے، یہ ول شعور کی روکی تکنیک میں تحریر کیا ہے۔ ڈھائی ہزار سالوں پر محیط اس کہانی کو سنبھالنا کسی عام لکھاری کے بس کی بات نہ تھی۔ اس کے لیے قرۃ العین جیسی صاحب طرز اور وسیع مطالعہ ول نگار ہی درکار تھیں جسے صرف سرزمین ہندوستان کی سیاسی اور ثقافتی تاریخ ہی از نہیں تھی بلکہ فکشن میں اس تاریخ کو ایسا پس منظر کے طور پر تازے کا سلیقہ بھی آتا تھا۔ قرۃ العین کا ہندوستان ایسا مضبوط ثقافتی پیمانے لیے ہوئے ہے اور ہر سے آنے والے کلچر اس کی رنگارنگی میں صرف اضافہ ہی کرتے رہے ہیں کی نہیں کرتے۔ ثقافتی تنوع کا یہ یہاں لحاظ سے تو نہیں کہ جواہر لال نہرو اور رابندر تھائیگور پہلے ہی اس تفصیل سے اظہار خیال کر چکے ہیں لیکن ایہم ول کے یوں روپوں میں یہ ہم پہلی مرتبہ اس وضاحت کے ساتھ استعمال کی گئی ہے کہ پڑھنے والوں کو رہا جا۔ ہیا دور یہی وجہ ہے کہ قرۃ العین حیدر کے ”آگ کا دریا“ کا ذکر ایسا ہو کر رہا ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ اردو فکشن کی روایت میں ”آگ کا دریا“ نے کم و بیش ایسا دیومالا کی حیثیت اختیار کر لی ہے۔ حد تو یہ ہے کہ فکشن کے تنقید میں بھی ”آگ کا دریا“ ایسا مرمی حوالہ بن چکا ہے اور اس کی اشاعت کے بعد وجود میں آنے والے تقریباً تمام ایہم ول اس حوالے کے اشاعت سے آزاد نہیں ہو سکے ہیں۔

.. دو میں ای . ول ایسا لکھا ہے جس کے سحر میں اردو کا ای . ابطقہ فقا رہا ہے۔ اس . ول کے تاجم د کی کئی زبوں میں بھی ہوئے ہیں اس . ول کا . م ”کئی چا . تھے سر آسمان“ ہے۔ سرسوتی سماں یہ فتنہ شمس الرحمن فاروقی نے اس شہرہ آفاق . ول کو تحریر کیا ہے۔ قدیم ادب نے اس . ول کو خصوصی دلچسپی کے ساتھ اپنی آراء سے نوازا ہے۔ شمس الرحمن فاروقی کا یہ شاہکار . ول اٹھارہویں صدی کے راجپوت نے سے شروع ہو کر دہلی کے لال قلعہ میں ختم ہو جاتا ہے۔ جو تقریباً صدی سے کچھ زرا عرصہ چمچٹ ہے۔ اٹھارہویں اور انیسویں صدی کے ہند کے اسلامی تمدن، انی تہذیب . وادبی معاشرہ، انگریزوں کی سیاسی چٹا ، اس دور کی لبتی ہوئی زوال پ . تہذیب . اور تر پیکر کو اس . ول کا موضوع بنایا ہے۔ فاروقی نے اس . ول میں مغلیہ سلطنت کا زوال، اردو فارسی شاعری کی صورت حال، زنگی کی . تہذیب اور روحانی تکمیل کی تلاش، قومی یکجہتی، عشق و محبت، فن کی تلاش، حالات کی تلخی اور دشابہت کا خاتمہ وغیرہ کی ز . د عکاسی کی ہے نیز ہندوستانیوں کی بے بسی، انگریزوں کا ظلم و ستم، حکومت وقت کے خلاف بغاوتی تیور، اپنی ان کے مجروح ہونے کا احساس اور نوا . دینی م کے منفی اثا ت پ بھی فاروقی نے مفصل روشنی ڈالی ہے۔

اس . ول کا عنوان ”کئی چا . تھے سر آسمان“ شمس الرحمن فاروقی نے اپنے ای عزیز دو . مشتاق احمد کے شعر سے مستعار لیا ہے۔ پورا شعر حظہ فرما :

کئی چا . تھے سر آسمان کہ چمک چمک کے پلٹ گئے
نہ لہو مرے ہی جگر میں تھا نہ تمہاری زلف سیاہ تھی
واضح ہو کہ مشہور . ول نگار انتظار حسین نے اس . ول کو اردو ادب کی د میں صرف بلچل سے ہی تعبیر نہیں کیا ہے بلکہ اسے ”امراؤ؟ جان ادا“ جیسے شاہکار . ول کے مماثل قرار دی ہے۔

المختصر یہ کہ اس مختصر سی تحریر میں اردو کے بیشتر قابل ذکر . ول جن کا ذکر کر رہے بے حد ضروری بھی تھا یہاں موضوع گفتگو نہ بن سکے، لیکن ان چند منتخب . ولوں کے تجزیاتی مطالعے سے یہ بت واضح ہوتی ہے کہ . ول کے حوالے سے بھلے ہی اردو کا دامن اتنا وسیع نہیں ہے جتنا کہ د کی د تہذیب نے نوازا ہے، لیکن جو . ول اردو میں تحریر کیے گئے ہیں وہ موضوع کے اعتبار سے متنوع ہونے کے ساتھ ساتھ سماجی، تہذیب اور ثقافتی اعتبار سے بھی کافی معیاری اور بہتر ہیں۔ اردو کے . ول نگاروں سے بھی امید ہے کہ وہ مستقبل میں اردو میں معیاری . ولوں کا اضافہ کریں . ورا اردو . ول کو د کے تہذیبی فتنہ ادب کے مقابل کا بنا گے۔



کئی چاں تھے سر آسماں پائی اجمالی

شمرین شفیق احمد،

اسٹنٹ پروفیسر، ایم۔ ایس۔ جی آرٹس، سائنس اینڈ کامرس کالج، مایاؤں (کیمپ)، سک، مہاراشٹر۔ ۱۔

اردو زبان کے یہ ساز، شاعر، افسانہ نگار اور بے مثل، دل نگار شمس الرحمان فاروقی کی ولادت سن ۱۹۳۵ء کو اعظم ھ کے کوڑیپ رگاؤں میں ہوئی۔ آپ کی ولادت جس گھرانے میں ہوئی وہ ای علم دو ھ گھرانہ تھا، آپ کے دادا حکیم مولوی محمد اصغر فاروقی تعلیم کے شعبے سے وابستہ تھے اور فراق گورکھ پوری کے استاد تھے جبکہ آپ کے ۰۰ محمد نظیر نے بھی ای چھوٹا سا اسکول قائم کیا تھا جو اب کالج میں تبدیل ہو چکا ہے۔ فاروقی نے ابتدائی تعلیم اعظم ھ میں، جبکہ بی اے گورپ راور ایم اے الہ دیونیورسٹی سے کیا۔

شمس الرحمان فاروقی موجودہ ادبی منظر ے میں، بغیر روزگار کی حیثیت ر ھ ہیں۔ انھوں نے جس جس صنف میں اپنے قلم کو جنبش دی ہے اس صنف میں وہ اپنے معاصرین سے کہیں آگے آتے ہیں۔ بحیثیت دا علمی شخصیت کو اب علم نے یہ ساز کا عہدہ تفویض کیا ہے۔ افسانوں کے حوالے سے آپ کے تجرباتی افسانے جن میں آپ نے حقائق کو افسانوی ۱۰ از کیا ہے قابل توجہ اور لائق تعریف ہیں۔ یہ شاعری میں آپ کے شعری مجموعے 'آسمان محراب' کو سنگ میل کی حیثیت حاصل ہے۔ اسی طرح آپ کے شاہکار 'ول' 'کئی چاں تھے سر آسماں' اور 'قبض زماں' اپنی مثال آپ ہیں۔ کیوں کہ ان میں دستاویزی معائنات اور اقدار کو فکشن کار ۱۰ دی ے۔ 'کئی چاں تھے سر آسماں' فاروقی کا وہ ۱۰ ول ہے جسے اردو ادب کے بہترین اور معیاری ۱۰ ولوں میں بلا جھجک شمار کیا جائے گا۔

'کئی چاں تھے سر آسماں' ول کا عنوان فاروقی نے اپنے ای عزیز دو ھ مشتاق احمد کے شعر سے مستعار لیا ہے۔ پورا شعر حفظ فرما ---

کئی چاں تھے سر آسماں کہ چمک چمک کے پلٹ گئے
نہ بو مرے ہی جگر میں تھا نہ تمہاری زلف سیاہ تھی

شمس الرحمان فاروقی کا یہ شاہکار، ول اٹھارہویں صدی کے راجپوت ۱۰ نے سے شروع ہو کر دہلی کے لال قلعہ میں ختم ہو جا ھ ہیا س ۱۰ ول میں تقریباً ۱۰ صدی کی ۱۰ رنخ کا بیان ہمیں ملتا ہے۔ اس دور کی اسلامی تہذیب ۱۰ تمدن، معاشرت، انگریزی ول کی سیا ھ، اور زوال ۱۰ تہذیب ۱۰ کا عکس اس ۱۰ ول میں آ ھ ہے۔ فاروقی نے اس ۱۰ ول میں مغلوں کی سلطنت کا زوال، اردو فارسی شاعری کا پیش منظر، ز ۱۰ گی کی ۱۰ تہذیبی اور روحانی تکمیل کی تلاش، قومی یکجہتی، عشق و محبت، حالات کی تلخی وغیرہ کی ز ۱۰ د ھ عکاسی کی ہے نیز ہندوستانی عوام کی بے بسی، انگریزی حکام کا ظلم و ستم، انگریزی حکومت کے خلاف بغاوتی تیور، اپنی ۱۰ کے مجروح ہونے کا احساس اور نوآ ۱۰ دیتی م کے منفی اث ۱۰ ت بھی مفصل روشنی ڈالی ہے۔

'ول' 'کئی چاں تھے سر آسماں' میں جو زبان استعمال کی گئی ہے وہ آج کی زبان نہیں ہے، بلکہ ہم اس زبان کو ماضی ۱۰ تہذیب ۱۰ کی زبان بھی نہیں کہہ ھ بقول فاروقی انھوں نے اس ۱۰ ول میں جس عہد کی عکاسی کی ہے اسی عہد کی زبان کو استعمال کرنے کی کوشش بھی کی ہے۔ اس اعتبار سے ۱۰ ول میں مستعمل زبان کا وافر حصہ موجودہ قاری کے لیے مانوس ضرور ہے لیکن فنی اعتبار سے اسے ۱۰ ول کی خامی نہیں ما ۱۰ جاسکتا، واضح رہے کہ ۱۰ مانوس زبان کا استعمال یہ ۱۰ ول کی ۱۰ ابی ۱۰

خامی نہیں ہے بلکہ اسے ول کے تقاضوں کو مدد دے ہوئے ای۔ بی قوت کے طور پر دیکھنا اور تسلیم کرنا چاہئے۔ ول میں مانوس زبن کی ای۔ بی وجہ یہ بھی ہے کہ فاروقی نے ول میں بیا کی جو حکمت عملی اختیار کی ہے، اس کی رو سے ول کی زبن کا حصہ وہ ہو ہی نہیں سکتا جسے ہم آج استعمال کرتے ہیں۔ فاروقی نے ول میں بیا کو اس طرح استعمال کیا ہے کہ پورا ول ای۔ سے زبانی راویوں کے ذریعے بیان ہوا ہے۔ میرے دے ول کی سے بی خوبی اور قوت اس کے زبن و بیان میں پوشیدہ ہے۔ ای۔ خاص عہد کی زبن کو دوبارہ زہ کر کے اس طرح استعمال کرنا کہ واقعات بھی پوری طرح واضح ہو جا اور بیا کے اصول بھی مجروح نہ ہوں، نہایت مشکل اور صبر آزما کام ہے جسے فاروقی نے بہ حسن و خوبی کامیابی کے ساتھ ادا کیا ہے۔ کردار نگاری کے حوالے سے بھی فاروقی کافی کامیاب رہے ہیں۔ انھوں نے جن کرداروں پر خاص توجہ کی ہے وہ کردار ذہن نقش ہو کر رہ جاتے ہیں۔ ان کے کردار جامع، متحرک اور بہترین صفات سے مزین ہیں۔ کرداروں کو دلچسپ بنانے کے لئے فاروقی نے جا۔ ارفقروں اور محاورات کا خوب استعمال کیا ہے۔ کرداروں کو دلکش اور لطف بنانے کیلئے بھی فاروقی نے کافی محنت کی ہے۔ ان کی مرقع نگاری اعلیٰ اور معیاری ہے۔ فاروقی نے ول میں منظر نگاری سے بھی خوب کام لیا ہے، قدیم خانہ ہوں کا م، رنگوں کی تفصیل، دہلی کے گلی کوچوں کی چہل پہل، چائے خانوں کی رونق، نوابوں کی حویلیاں، امراء و رؤسا کے عالی شان محلات، قلعے کی فصیلیں اور اس کے آرونی و خال، سیر و تفریح کے واقعات اور سفر کی دشواریوں کا بیان اور منظر نگاری اس طرح سے کی ہے کہ ساری چیزیں قاری کے سامنے متحرک آتی ہیں۔

واقعات نگاری کے حوالے سے بھی کئی چا۔ تھے سر آسمان، ای۔ لاجواب، ول ہے۔ ول میں واقعات ای۔ دوسرے سے اس قدر مربوط ہیں کہ جھول کہیں بھی نہیں آتے، مخصوص اللہ آرٹسٹ سے لے کر وزیر خانم کے والد یوسف کے تمام واقعات میں واقعات کا تخلیقی فن عروج پر آتا ہے۔ تمام واقعات کا ای۔ دوسرے سے ایسا ربط و ضبط ہے کہ کوئی بھی بت قیاس سے نہیں معلوم ہوتی۔ ول کو نہایت سیدھے سادھے پیرائے میں بیان کیا ہے بلکہ یہ کہا جائے تو بجا ہوگا کہ فنکار نے اپنے فن کے جادو سے کچھ دکھا دیا ہے۔ واقعات نگاری کے ساتھ ساتھ نیات نگاری بھی ول میں موجود ہے عمارتوں کی تعمیر و نقش نگاری، زیبائش و آرائش، روشنی کا انتظام، شاہی سواریوں، لباس اور خوردنی اشیاء کا بیان ماہرانہ از میں کیا ہے۔

فاروقی نے ول میں جگہ جگہ اردو اور فارسی اشعار کا استعمال کیا ہے جس پر کچھ ارباب کو تکلیف محسوس ہوئی، لیکن ارباب کو یہ خیال رکھنا چاہئے کہ فاروقی نے اس ول میں جس عہد اور ماحول کی عکاسی کی ہے اس میں اردو اور فارسی کے اشعار کا استعمال نہایت ضروری تھا ورنہ اس عہد اور ماحول کی کامیاب عکاسی نہ ہوتی۔ خیال رہے کہ اردو اور فارسی اشعار کے استعمال نے ای۔ طرف جہاں بیا کو رکھا گیا ہے وہیں دوسری طرف اشعار کے استعمال سے اس حقیقت کا اظہار بھی ہوا کہ ہماری قدیم ادبی تہذیب میں شعر سننے کا رواج عام تھا اور اسے آداب محفل و طرز گفتگو وغیرہ میں غیر معمولی اہمیت حاصل تھی۔ موقع و حالات کے اعتبار سے بہترین اور اعلیٰ درجے کے شعر سننا شخصیت کی خوبی اور علم کی علامت سمجھا جاتا تھا۔ اور جواب میں محل شعر پر ڈھ دینا مزہ خوبی کی بت سمجھی جاتی تھی۔

”کئی چا۔ تھے سر آسمان، شمس الرحمان فاروقی کا ایسا ول ہے جس نے شائع ہوتے ہی ادبی د میں خاصی پلچل مچائی۔ ہمیشہ کی طرح اس ول کے رے میں بھی دونوں طرح کے قدیم سا منے آئے۔ کچھ نے اسے ول ہی ماننے سے انکار کر دیا اور کچھ سے ول کے لیے سنگ میل قرار دیا۔ ارباب کے اس اختلاف سے ہٹ کر عام قاری کی بت کریں تو فاروقی کا یہ ول اپنی اثنا سے لیکر آج لگا۔ رعام قاری کی توجہ اپنی طرف کھینچ رہا ہے اور مقبولیت عام کے نئے اعداد و شمار بنانا جارہا ہے اور مجھے امید ہے کہ بھی اردو ادب کے بہترین ولوں کی بت کی جائے گی ان میں کئی چا۔ تھے سر آسمان کا م ضرور آئے گا۔

☆☆☆

عکاسی، لخصوص آدرشوں کے ٹوٹنے اور ای۔ خود غرض سماج ریس آنے کی داستان۔ ولوں میں رقم ہونی شروع ہوگئی۔ آزادی کے وقت
تی پسند تخری زوال کی طرف قدم بٹھا چکی تھی اس کے لکھنے والے ہنوز لکھ رہے تھے۔ کرشن چندر، عزیز احمد، عصمت چغتائی، احسن
فاروقی سابق میدان میں موجود تھے۔

آزادی کے بعد اردو۔ ول نگاری میں زیادہ تقسیم ہند کے لمبے کو بطور موضوع اپنایا۔ اس دور کے۔ ول نگاروں میں کرشن
چندر، عزیز احمد، احسن فاروقی، قرۃ العین حیدر، شو۔ صدیقی، راجندر سنگھ بیدی، اختر اور نیوی، عبداللہ حسین، بچہ مستور، حیات اللہ
ری، جمیلہ ہاشمی، ممتاز مفتی، قاضی عبدالستار، سہل عظیم آبادی، جیلانی، نو، انتظار حسین، نو قدسیہ وغیرہ کے۔ م آتے ہیں۔

۱۹۸۰ء کے بعد اردو۔ ول نگاری کا دور۔ یہ دور کہلاتا ہے۔ ۱۹۸۰ء کے بعد اردو۔ ول میں موضوعات کی سطح کافی وسعت پیدا
ہوئی ہے مختلف موضوعات کو۔ ول میں جگہ ملنے لگی ہے۔ دور حاضر میں ز۔ گی کی کشمکش، صارفیت کے اثات، بے روزگاری کے معات کو
۔ ول نگاری نے موضوع بنایا ہے۔ اس دور کے۔ ول نگاروں میں قرۃ العین حیدر، قاضی عبدالستار، جیلانی، نو، غیاث احمد گدی، انتظار حسین
، صلاح الدین پوین، نو قدسیہ، جوگندر پل، عبدالصمد، پیغام آفاقی، حسین الحق، شمول احمد، الیاس احمد گدی، غضنفر، مشرف عالم ذوقی، علی امام
ی، یان سنگھ شاطر، اقبال مجید، سید محمد اشرف، سا۔ ہزی، یعقوب یور، کوٹ مظہری، شفق، محمد علیم، اچاریہ شو۔ خلیل، شاہد
اختر، مظہر الزماں خان، انور خان، انور سجاد، فہیم اعظمی، نور الحسنین وغیرہ ہیں۔

مندرجہ بالا۔ ول نگاروں میں آ ہندستانی سندہ۔ ول نگاروں کی بت کریں تو جوگندر پل، قرۃ العین حیدر، قاضی عبد
الستار، جیلانی، نو، شمول احمد، عبدالصمد، غضنفر، مشرف عالم ذوقی، پیغام آفاقی، اقبال مجید، سید محمد اشرف، شفق، ظفر پیامی، علی امام ی
اور الیاس احمد گدی کے۔ م آتے ہیں۔

اس طرح اردو۔ ول نگاری اپنے دور اور زمانے کے حالات کے موضوع کو لے کر آگے بڑھتی جا رہی ہے۔





A Case Study of the Socio-Economic Situation of Power Loom Workers with Reference Malegaon City of Maharashtra

Miss Shaziya Nausheen Jaleel Ahme¹, Dr. Bachhav Nandkishor Bhagchand², Dr. Uttam P. Suryawanshi³

¹Research Scholar, Department of Geography, M.S.G Arts, Science and Commerce College Malegaon Camp, India.

^{2,3}Professor in Geography. M.S.G College Malegaon Camp, India.

Email Id: shazi.nausheen@gmail.com¹, nbbachhav1971@gmail.com², upsuryawanshi@gmail.com³

Orcid id:0009-0009-1561-480X

Abstract

The power loom sector has a significant positive impact on India's economy. The workers who have been having problems for the past few years are mostly responsible for the power loom industry's success, but it also provides work for many of the people engaged in India's textile industry. As a result, their social and economic situation is getting worse. Examining the workers' current socioeconomic situation and outlining the reasons behind the textile industry in Malegaon are the main objectives of this article. Field surveys served as the investigation's methodology. There are 250 workers in total. The social and economic conditions of the labour are horrifying, according to studies. The power loom sector is extremely important to the Indian economy. Additionally, it supports the textile sector by adding jobs. Economic necessity is the main factor influencing the social and economic situation. To enhance the working conditions, it is urgently necessary to expand both government involvement and power union authorization.

Keywords: Malegaon city, socio-economic condition, power loom, Problems.

1. Introduction

The power loom sector is one of the greatest employers in the country, both directly and indirectly. India is the sixth-largest exporter of clothes and textiles in the world. This country has the second-largest mill sector in the world, and it requires a lot of cash. The power loom industry in India produces a wide range of fabrics, including cotton, grey, patterned, and mixtures of cotton, synthetic, and other fibres. Power looms, one of the main contributors to the nation's textile industry, are used to make the majority of the textiles produced in India. Because the textile sector is a major contributor to India's economy, power looms are important. In India, 58.4% of total textile production is produced on power looms. Maharashtra was the location as of April 2022. Maharashtra was the state with the highest concentration of power looms, accounting for 39% of all looms. Andhra Pradesh, Gujarat, Uttar Pradesh, and Karnataka are some of the other top generating states for power loom

products in India. Maharashtra and Tamil Nadu. Indian power loom industry, with a special emphasis on the power loom cluster. Decentralised power looms account for 60% of India's textile production, followed by handlooms (20%), knitting (15%), and organised industry (5%). The Indian textile industry depends heavily on the decentralised power loom sector. Nearly 7 million people are employed by India's 19.42 lakh power looms, which produce about 19,000 million metres of cloth yearly. Today's textile industry produces a vast range of fabrics, including cotton, cotton blends, printed, coloured, and grey materials, among others. To countries like the United States, France, Germany, Bangladesh, Hong Kong, Italy, etc., the nation exports goods worth Rs. 44,000,000,000. Although the power loom market first expanded slowly, it has recently started to accelerate [1-3]. There are already roughly 50,000 shuttle-free looms, of which 35,000 are used in the decentralised sector. Most power loom



facilities are found in rural or semi-urban settings. Maharashtra boasts an estimated 8 lakh power looms, which is the most in the entire world. Gujarat is in third place with 4 to 4.5 lakh units, followed by Tamilnadu in second with 5 lakh units.

2. Review of The Literature

- 1Mrs. M. Vanitha & 2 Prof. C. Venkatachalam (2019) In Tamil Nadu there are some districts are very famous for power loom sector like Erode, Coimbatore, Karur, Salem and so on. The Jalakandapuram, Kattampatty, Savuriyur, Vanavasi, Vandimedu, all the areas very famous for power loom sector, most of the women in this area involved in the power loom work. This industry produces wide range of fabrics from printed fabric, dyed fabric, cotton fabric, grey, various mix of cotton, synthetic, and other kind of cloths. In this sector women also play a vital role. This sector not have separate working place, the living place and working place is same. The women laborers also work hard compare to men. Even though the laborers are face so many economic challenges in the family. They are not getting proper income.
- Lalmalsawmi Renthlei (2019) In the present study, an analysis is done on the socio-economic profile of handloom weavers and problems of this industry in Zuangtui Handloom Cluster that lies at the outskirts of Aizawl City, Mizoram. This study is conducted on the basis of both primary and secondary data sources. It reveals that the condition of the weavers is weak due to financial constraints, health problem and poor Government support.
- Dr. G. Prathap¹, Prof. M. Chinnaswamy Naidu² (2015) The sector is beset with various problems, such as obsolete technology, haphazard production system, low productivity, inadequate working capital, conventional product range, weak marketing links, overall stagnation of production and sales and above all, competition from power looms and mill sector. There is no doubt that India's textiles constitute one of the costly sources of textile designs in the world, drawn upon increasingly by textile

designers, product designers and craze designers from all nationalities. Predominantly Mahatma Gandhi recognized the significance of textile handicrafts during the struggle for independence [4]. A notable aspect of Gandhi's views on this issue is that he emphasized not only handloom weaving but also spinning by hand. Gandhi emphasized hand spinning so much that the instrument for this the Charkha become a leading symbol of the freedom movement. Most of the handloom weavers are willing to live in a joint family system. The income and living standards of the handloom weavers are very poor.

3. Objective

- To study the present socio economic status of these workers in Malegaon City.
- To examine the power loom workers' working environments in Malegaon City.

4. Data Base and Methodology

The fundamental information on which this study is built. For primary research, weavers were questioned in-person and by self-observation. Observation and conversations with power loom workers served as the main sources of information for determining the actual state. Along with a number of male workers, I found that both male and female workers were winding power looms in various locations. The entire covered area of Malegaon City depends on the power loom business, thus I choose the conducive to researchers Dyaneshivar and Maldashir Wards. Which the researcher can easily access are the wards. I randomly choose about 80 worker households from different wards in the city of Malegaon within 02 wards. These wards were chosen using the researcher's informal network of contacts that she developed throughout her year as a resident there. 250 power loom workers were questioned within 80 homes. In-depth interviews with households that weave either full- or part-time are conducted for this study.

5. Selection of Study Area

Malegaon city in the Maharashtra, India, located in the Nashik district was chosen by the researcher as

the study area. The following characteristics have an influence on the unique Malegaon city for consideration as a study area. Malegaon is a city and municipal corporation in the Nashik District of Maharashtra, India. Malegaon is located at 18.42°N 77.53°E, near the junction of the Girna and Mausam rivers, at a height of 438 metres (1437 feet). It is located 280 kilometres northeast of Mumbai, the

state capital. Nashik, Manmad, Mumbai, and Dhule are all adjacent cities with strong connections. Malegaon is known as Maharashtra's Textile Hub. Malegaon is a key centre for the weaving of textiles on early twentieth-century power looms. After 1935, the city entered a new age of power. Malegaon was a traditional Maharashtra handloom weaving centre[5].

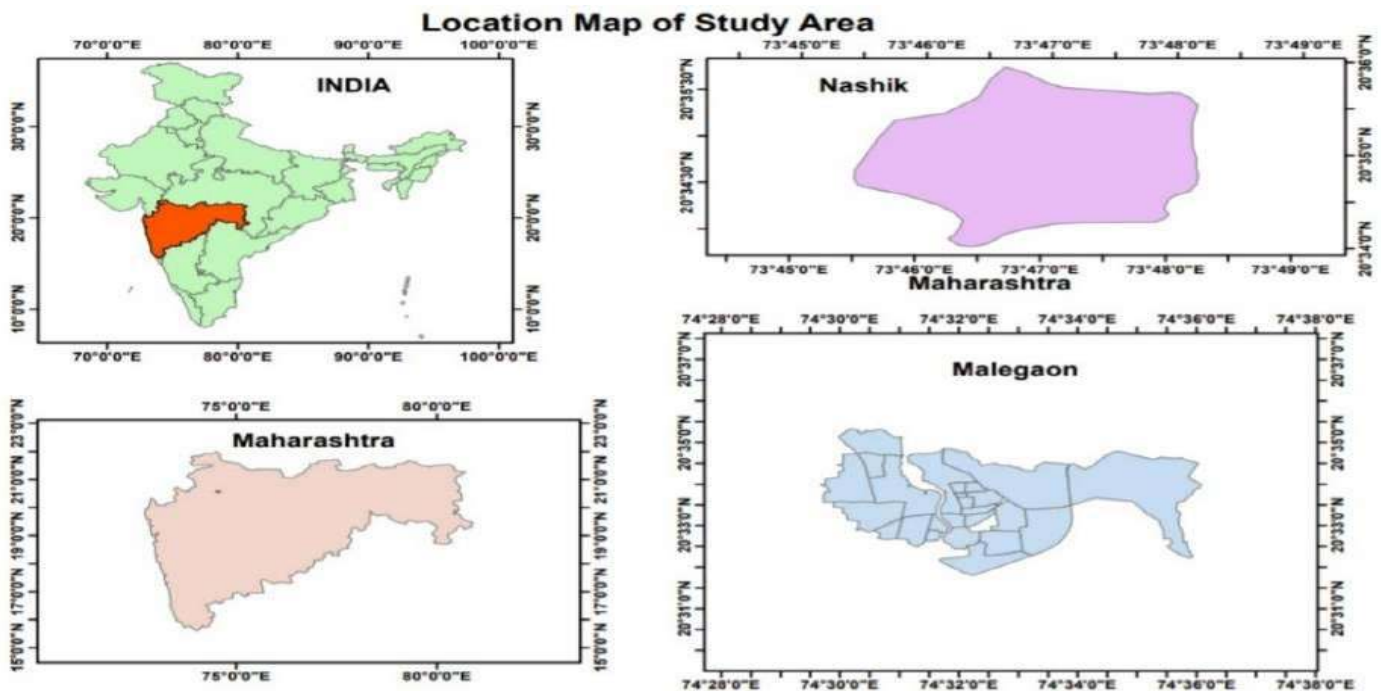


Figure 1 Location Map of Study Area.

6. Result and Discussion

- Primary data

Table 1 Age Group

| S. No | Age Group | No of Respondents | Percentage |
|-------|--------------|-------------------|-------------|
| 1 | 15 to 25 | 44 | 17.6% |
| 2 | 25 to 35 | 75 | 30.00% |
| 3 | 35 to 45 | 92 | 36.8% |
| 4 | 45 to 56 | 39 | 15.6% |
| | Total | 250 | 100% |

According to the Table 1, 17.6% of respondents are between the ages of 15 and 25, while 30% of the

total respondents are between the ages of 25 and 35. And 36.8 % of the total respondents are between the age 35 and 45. Only 15.6% of respondents were older than 45 to 56, according to the data

Table 2 Educational Status

| S. No | Educational Status | No of Respondents | Percentage |
|-------|--------------------|-------------------|------------|
| 1 | Primary | 120 | 48.00% |
| 2 | Higher Secondary | 117 | 46.8% |
| 3 | UG/PG Degree | 13 | 5.2% |



| | | | |
|--|--------------|------------|-------------|
| | Total | 250 | 100% |
|--|--------------|------------|-------------|

All respondents are literate when it comes to the educational backgrounds of the weavers shows in Table 2. 4.8% of respondents are in primary education, 46.8% are in higher education, and only 5.2% are graduates.

Table 3 Type of Family

| S. No | Type of Family | No of Respondents | Percentage |
|-------|----------------|-------------------|-------------|
| 1 | Joint Family | 92 | 36.8% |
| 2 | Nuclear Family | 136 | 54.4% |
| 3 | other | 22 | 8.8% |
| | Total | 250 | 100% |

According to the Table 3 statistics, 54.4% of workers were in nuclear families, 36.8% were in joint families, and 8.8% have moved to another location.

Table 4 Working Experience

| S. No | Year of Experience | No of Respondents | Percentage |
|-------|--------------------|-------------------|-------------|
| 1 | 05 to 10 | 29 | 11.6% |
| 2 | 10 to 15 | 44 | 17.6% |
| 3 | 15 to 20 | 82 | 32.8% |
| 4 | 20 to 30 | 95 | 38.00% |
| | Total | 250 | 100% |

Table 4 refers number of years spent weaving, 11.6% of weavers have experience 5 to 10 years; 17.6% have experience from 10 to 15 years; 32.8% have experience from 15 to 20 years; and 38% have experience from more than 30 years.

Table 5 Working Hours

| S. No | Working Hours | No of Respondents | Percentage |
|-------|---------------|-------------------|-------------|
| 1 | 6 to 8 | 64 | 25.6% |
| 2 | 8 to 10 | 88 | 35.2% |
| 3 | 10 to 12 | 98 | 39.2% |
| | Total | 250 | 100% |

It is evident from Table 5 that 39.2% of workers put in a 10 to 12-hour shift per day. 35.2% of the workforce puts in 8 to 10 hours every shift. Only 25.6% of the workforce works an 6 to 8-hour shift. Alternate. In addition, the survey found that power loom weavers employed by a plant in Malegaon City work without a set weekly holiday.

Table 6 Monthly Income of the Respondents

| S. No | Monthly income | No of Respondents | Percentage |
|-------|----------------|-------------------|-------------|
| 1 | Up to 10000 | 92 | 36.8% |
| 2 | 10000 to 15000 | 78 | 31.2% |
| 3 | 15000 to 20000 | 68 | 27.2% |
| 4 | Above 20000 | 12 | 4.8% |
| | Total | 250 | 100% |

According to the Table 6 statistics, around 36.8% of people have monthly incomes of up to Rs. 10000, 31.2% earn between Rs. 10000 and Rs. 15000, 27.2% earn between Rs. 20000 and Rs. 20000, and 4.8% earn more than Rs. 20000.

Table 7 Working Condition

| S. No | Working Condition | No of Respondents | Percentage |
|-------|------------------------|-------------------|-------------|
| 1 | Construction | 66 | 26.4% |
| 2 | Teen Shed Construction | 135 | 54.00% |
| 3 | Wood Construction | 49 | 19.6% |
| | Total | 250 | 100% |

According to Table 7 the construction of industry number of responds 26.4 % good power loom industry construction other power loom industry is construction teen shed and wooden shed.

Table 8 Health Problems

| S. No | Health Problems | No of Respondents | Percentage |
|-------|-----------------|-------------------|------------|
| 1 | Eye side | 30 | 12% |
| 2 | Back pain side | 55 | 22% |
| 3 | Knee Pain | 46 | 18.4% |



| | | | |
|---|-------------------|------------|-------------|
| 4 | Joint Pain | 49 | 19.6% |
| 5 | Lungs pain | 12 | 4.8% |
| 6 | Heart Problem | 08 | 3.2% |
| 7 | Hearing Problem | 42 | 16.8% |
| 8 | No health problem | 08 | 3.2% |
| | Total | 250 | 100% |

The most prevalent health issue among weavers, as indicated by the aforementioned statistics, is back discomfort, which affects 22% of them. Among the other common health conditions are knee discomfort (18.4%), eye sight problems (12%), joint pain (19.6%), lungs pain (4.8%), heart problems (3.2%), and hearing problems (16.8%). It's noteworthy to notice that 3.2% of respondents claimed to have no health issues. Table 8 refers to the Health problems.

Problems faced by Workers

1) Power looms retried electricity to function. Malegaon city currently has low electrical efficiency. 3 to 4 hours of load shedding are experienced by workers each day. Load shedding causing stop of production which results in the workers losing duty time. other issues regarding electricity low high voltage occur as a results machine burns affecting the workers job and facing them to deal with financial situation.

2) According to the survey most of the power loom industries in Malegaon are made of Tin Sheds not proper way available of sanitation ventilation and increases the heat intensity in the workplace which has a significant impact on the health of the workers. Also due to in appropriateness there is a lot of pressure on the vision of the eyes. A part from this there is noise pollution due to old pattern loom. The workers do not use masks and earplugs at works place due to which they are suffering from respiratory diseases problems due to cotton dust.

Conclusion

From the Survey it can be found that the multi population of Malegaon consists of Power Loom

labour. Power looms in Malegaon work in two shifts in which some workers do 8 to 10 duty to increase the salary as the workers have full capital affects the labour of power looms due to long nature of work they face physical and mental problems some workplace have harmful raw materials poor ventilation and poor lighting various health problems like body parts Muscle pains are suffering from eye problems and respiratory problems not cleaning the loom regularly. Lots of fibre dust are seen near it [6]. Due to lack of education among the workers they do not have the ability to understand. Due to low standard workers are not aware of any government scheme although the Government of India has also lunched that there is lack of awareness among workers about the schemes has gone.

Reference

- [1]. Shaikh FarukNajir and Ashok S. pawar (2012) Problems and prospects of power loom industry in Malegaon, Vol.3, issue 1, June 2012.
- [2]. Mrs. M. Vanitha& 2 Prof. C. Venkatachalam (2019) Socio-economic conditions of women laborers in power loom sector: A Sociological analysis ISSN: 2455-3085 (Online) Issue-03 RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary March-2019 www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]
- [3]. LalmalsawmiRenthlei (2019) Ray, Sreekumar 2001 Socio economic condition of the workers of power loom industry in West Bengal Ph.D Thesis.
- [4]. 4). Prakash B1, Dr. R. Guna Sundari 2 May 2021. A Study On Problems Faced and Satisfaction Level of Power Loom Owners in Somanur Journal Doi: 10.36713/Epra1013|Sjif Impact Factor (2021): 7.473 Issn: 2347-4378 Epra International Journal of Economics, Business and Management Studies (Ebms).



- [5]. Uttam Paul, A study of socio economic status of workers in the unorganized power loom sector of West Bengal Global Advanced Research Journal of Agricultural Science (ISSN: 2315-5094) Vol. 2(2) pp. 065-073, February, 2013.
- [6]. Sathiavathi, K (1990) study of socio economic conditions of power loom weavers in Komarapalayam Ph.D Thesis.



Environmental Assessment Cotton Dust in Malegaon City Maharashtra Textile Industries and Its Impact on Human Health

Miss Shaziya Nausheen Jaleel Ahmed^{1*}, Dr. Bachhav Nandkishor Bhagchand², Dr. Uttam P. Suryawanshi³

¹Research Scholar, Department of Geography, MGV'S Maharaja Sayajirao Gaikwad Arts, Science and Commerce College Malegaon Camp, India.

²Professor in Geography, MGV'S Maharaja Sayajirao Gaikwad Arts, Science and Commerce College Malegaon Camp, India.

³Associate Professor in Geography, MGV'S Maharaja Sayajirao Gaikwad Arts, Science and Commerce College Malegaon Camp, India.

Emails: shazi.nausheen@gmail.com¹, nbbachhav1971@gmail.com², upsuryawanshi@gmail.com³

***Orcid:** <https://orcid.org/0009-0009-1561-480X>

Abstract

The world's second-largest commerce after agriculture is textiles. India gains foreign commerce appreciations to its textiles sector. The operations involved in spinning, weaving, dying, printing, and finishing other procedures necessary to transform the fiber into a finished fabric or garment comprise the fabric production process. The industry, which employs between eight and one million people, is undoubtedly one of the biggest in our nation. There are few fabric turbines in the northern and southern parts of the nation, but the majority are located in the western part of the country, in places like Ahmedabad and Mumbai. Within the nation's financial system, the textile industry is quite important. An important part of the nation's economy is the fabric sector. 10% of worldwide income comes from it, while 20% of all company labour is directly employed by it. *India's textile sector has become more productive as a result of automation and ongoing expansion. As a result, the need for more raw resources damages the ecosystem. This study examines the effects of Malegaon City's textile industry on the environment and public health. It was determined that loud noises and cotton dust production are the main ways textile mechanical processes impact the work environment. This study's aims are to investigate any possible health risks associated with labour in Malegaon City's textile industry to ascertain the impact of occupational health hazards on worker health in Malegaon City's textile industry. Sample: The study includes a total of 230 workers. Research Design: A descriptive research design is used in this study. A worker observation checklist and a structured worker interview questionnaire are the two tools utilized to collect data. Every piece of information was gathered via field visit. Recommendations: The study suggests emphasizing the value and efficacy of personal protective equipment in addition to a series of standardized occupational health and safety assessments in fieldwork to enhance worker performance in terms of occupational health and safety. Conclusion: The textile industry provides employment to lakhs of workers. But due to lack of safety measures at the workplace, it is creating hazards to workers' health by creating awareness among workers and effective management. should be controlled.*

Keywords: Workplace Environment, Cotton Dust Pollution, Human Health Effect, Suggestion.

1. Introduction

The world's second-largest commerce after agriculture is textiles. India gains foreign commerce thanks to its textiles sector. The operations involved in spinning, weaving, dying, printing, and finishing other procedures necessary to transform the fiber into a finished fabric or garment comprise the fabric

production process. There are between eight and one million workers in the industry, which is undoubtedly one of the biggest industries in our nation. There are few fabric turbines in the northern and southern parts of the nation, but the majority are located in the western part of the country, in places like Ahmedabad



and Mumbai. Within the nation's financial system, the textile industry is quite important. An important part of the nation's economy is the fabric sector. 10% of worldwide income comes from it, while 20% of all company labour is directly employed by it. Additionally, 20% of garbage is generated by it. The industry is crucial to both the nation's budgetary equilibrium and the provision of basic goods to the whole populace [1-3]. The airborne contaminants that exist throughout any phase of cotton handling or processing are referred to as cotton lint. It could include a variety of substances, including fibre, fungi, bacteria, dirt, insecticides, and non-cotton plant material. The number of plants and any remaining pollutants that could build up with cotton during the growing, harvesting, and storage phases. An essential yet disorganized part of the fabric industry is the energy loom industry. Though widely distributed across the US, the three states of Maharashtra, Gujarat, and Tamil Nadu account for the majority of its population. Lastly, in several states, including Andhra, Karnataka, Punjab, West Bengal, and Uttar Pradesh. There are unique qualities unique to every electric loom center. The three biggest centers for power looms in Maharashtra are Bhiwandi, Ichalkaranji, and Malegaon. Cotton textiles are typically produced through a number of steps, ginning and finishing being the final ones. Every stage includes distinct health and safety risks that are exclusive to it. The Government of India has categorized industries into three groups based on the quantity of environmental pollution each company produces. Orange, green, and red. The most polluting industries are those in the red category, which is followed by those in the orange and green categories. This classification places the cotton spinning and weaving sectors in the orange group, indicating a high risk of producing dangerous pollution levels in the environment.

2. Review of The Literature

1. Hasanuzzaman Chandan Bhar (2016) Indian Textile Industry and Its Impact on the Environment and Health: A Review The Indian textile industry's productivity has increased due to ongoing development and automation. As a result, the environment is suffering due to an increasing

demand for raw materials. This study reviews the consequences of the Indian textile industry on human health and the environment, concluding that the major ways that the textile mechanical process affects the workplace environment are through creating cotton dust and loud noises. While the production of fibers and the use of chemicals have a significant detrimental influence on the environment, polluting the land, water, and air and releasing dangerous byproducts that unintentionally encourage acid rain and global warming.

2. Sintayehu Daba Wami, Daniel Haile Chercos, Awrajaw Dessie, Zemichael Gizaw, Atalay Getachew, Tesfaye Hambisa, Tadese Guadu, Dawit Getachew & Bikes Destaw (2018) Cotton dust exposure and self-reported respiratory symptoms among textile factory workers in Northwest Ethiopia: a comparative cross-sectional study Worldwide, there is a sharp rise in the prevalence of respiratory illnesses brought on by cotton dust, with emerging nations experiencing particularly severe cases. Cotton dust exposure is known to cause respiratory symptoms in workers, including cough, phlegm, wheezing, shortness of breath, chest tightness, and byssinosis. But in Ethiopia, there is little knowledge about the risk factors and little understanding of the scope of the issue. The purpose of this study was to evaluate the frequency of respiratory symptoms and their contributing factors.
3. Port Said Scientific Journal of Nursing Vol.4, No. 2, December 2017 Workers' Occupational Hazards at Textile Factory in Damietta City Ateya Megahed Ibrahim 1 Prof. Effat Mohamed El-Karmalawy 2 Ass. Prof. Mona AbdElshour Hassan 3 Dr. Fatma El-Emam Hafez 4. The health of textile manufacturing workers is severely and negatively impacted by occupational hazards. This study's objective is to evaluate the occupational health risks for Damietta City's textile factory workers. Sample: 108 workers participate in the study. Research design: The study employs a descriptive research design. Two instruments are used to collect data: the workers' Observational Checklist and the workers' Structured Interview



Questionnaire.

4. Antoine Vikkey Hinson, Virgil K Lokossou, Vivi Schlunssen, Gildas Agodokpessi, Torben Sigsgaard, Benjamin Fayomi (2016). In Benin's economy, the textile industry sector holds a significant position. It puts employees at risk for a number of workplace hazards, such as cotton dust exposure. This study was started and carried out in a cotton industry company in Benin in order to evaluate the impact that working with cotton dust had on the health of the workers. The cross-sectional study included 656 subjects who had been exposed to cotton dust and 113 subjects who had not; the study's goal was to assess the respiratory illnesses among textile workers exposed to cotton dust.

3. Objective

1. To identify potential health risks during work in the textile sector in Malegaon City.
2. To determine how workers' health in Malegaon City's textile sector is affected by working health hazards.
3. To determine the safety Recommendation that the textile industry workers in Malegaon City are using.

4. Data Base and Methodology

The power loom industry is quite well-known in Malegaon, the city in the Nashik district of Maharashtra state. Knitting workers are exposed to a lot of dust during harvesting, weaving, and pressing cotton. Most people who work in weaving and ginning only have 8 to 12-hour shift every day, and they spend eight to twelve hours a day in a dusty environment. In this study, 230 employees of power loom factories participated. which is situated in the Maharashtra state district of Nashik, Malegaon city. A survey on health was carried out in power loom plants using a questionnaire. In a number of disease research, questionnaires are employed to gauge participants' perceptions of health. A standardized investigation of respiratory disorders and other illnesses in connection to working conditions and the local language is being conducted in this project. Interviewers with training were able to gather data on the kind of employment, age, hours worked, and history of exposure to high dust levels, as well as

respiratory symptoms like tightness in the chest and difficulties breathing. a strong cough, chest tightness, and pain. The comprehensive data gathering questions also asked about habits including smoking, family history of asthma, and general health [4-8].

5. Selection of Study Area

The researcher selected Malegaon City, situated in the Nashik district of Maharashtra, India, as the study region. The distinct Malegaon city warrants attention as a research region due to the following features. Located in Maharashtra, India's Nashik District, lies the city and municipal corporation known as Malegaon. Malegaon is 438 meters (1437 feet) high and is situated at 18.42°N 77.53°E, close to the confluence of the Girna and Mausam rivers. Mumbai, the state capital, is 280 kilometers northeast of it. Adjacent cities with good connectivity are Nashik, Manmad, Mumbai, and Dhule. Maharashtra's Textile Hub is Malegaon. For the weaving of textiles on power looms from the early 20th century, Malegaon is an important hub. The year 1935 saw the city conductor in a new era of dominance. A traditional hub for handloom weaving in Maharashtra was Malegaon.

6. Result and Discussion

Table 1 Workplace Environment

| S. No | Variables | Response | Percentage |
|-------|------------------------------|----------|------------|
| 1 | Ventilation | 67 | 29.14 % |
| 2 | Ventilation satisfaction | 31 | 13.48 % |
| 3 | Light satisfaction | 34 | 14.78 % |
| 4 | Washroom availability | 48 | 20.87 % |
| 5 | Availability of first aid | 24 | 10.43 % |
| 6 | Head and nose cover | 18 | 7.83 % |
| 7 | Use of protective components | 8 | 3.47 % |
| Total | | 230 | 100% |

The Textile Workplace Environment Area Ventilation Table 1 above indicates that 29.14% of the available ventilation is satisfactory. 13.48 % Workplace Lighting: 14.78% was recorded. The



Washroom availability is 20.87%. First Aid Resources Available 10.43 Percent Head and Nose Cover 7.83 Use of Protective Equipment 3.47 Survey data recorded.

Table 2 Textile Department

Table with 4 columns: S.No, Department, No of Response, Percentage. Rows include Blow room, Carding, winding, Weaving, Packing, and Total.

The textile business is divided into several departments, with 13.48% of employees working in the blow room. 20% are Winding Machine Workers and 16.95% are Carding Department. 11.30% of workers are engaged in the packing area, whilst 38.30% work in the weaving department, shown in Table 2.

Table 3 Types of Products Manufactured

Table with 4 columns: S.No, Products, Number, Percentage. Rows include Grey Cotton, Colour Saree, Lungi, and Total.

Malegaon Power looms are mostly focusing on Gray cloth cotton and synthetic 71.73%, other manufactured items are lungi 12.17%and sarees

fabrics 16.01%. All these productions are Power loom Productions, shown in Table 3.

Table 4 Working Experience

Table with 4 columns: S. No, Year of Experience, No of Respondents, Percentage. Rows include experience ranges from 05 to 10 to Total.

Regarding the number of years expended knitting, 9.13% of weavers have experience 5 to10 years; 19.13% have experience from 10 to 15 years; 32.61% have experience from 15 to 20 years; and 39.13% have experience from more than 30 years, shown in Table 4.

Table 5 Working Hours

Table with 4 columns: S. No, Working Hours, No of Respondents, Percentage. Rows include working hour ranges from 6 to 8 to Total.

It is evident from Table 5 that 42.61% of workers put in a 10 to 12-hour shift per day. 38.26 of the workforces puts in 8 to 10 hours every shift. Only 19.13% of the workforce works an6 to 8-hour shift. Alternate. In addition, the survey found that power loom weavers employed by a plant in Malegaon City work without a set weekly holiday, shown in Table 5



Table 6 Habit

| S. No | Habit | No of Respondents Yes | Percentage | No of Respondents No | Percentage | Total |
|-------|-----------------|-----------------------|------------|----------------------|------------|-------|
| 1 | Smoking | 175 | 76.08 | 55 | 23.2 | 100 % |
| 2 | Tabacco /Gutkha | 132 | 57.39 | 98 | 42.60 | 100% |
| 3 | Alcohol | - | - | - | - | 00% |

A table survey reveals that approximately 76.08% of textile industry workers smoke regularly, while 55% do not. 57.39 workers use gutka and tobacco.42.60% of employees do not make use of. More diseases are caused by liver problems than by smoking or ingesting gutkha, shown in Table 6.

Table 7 Cotton Dust Issues

| Types | Size of Particles (µm) |
|-----------------|------------------------|
| Trash | (> 500/lm), |
| dust | (50- 500/lm) |
| micro dust | (15-50/lm) |
| respirable dust | (« 15/-lm) |

Table 7 One of the biggest issues facing the cotton textile business is cotton dust in the workplace. This issue is more prevalent in each part. Small and microscopic particles of different substances exist in the air as dust, and they sink gradually to allow for long-distance airborne transportation. The International Committee for Cotton Testing Methods established a classification system that allows the particles in cotton dust to be categorized based on their size. Technical dust, which consists of fiber fragments on the fiber's surface, and organic and inorganic natural dust are the two types of dust found in cotton spinning mills. 50–80% fiber fragments, leaf and husk fragments, 10–25% sand, and 10–25% water soluble components make up micro and fine dust. A high percentage of fiber fragments suggests that during processing and weaving, a significant amount of micro and fine dust is produced. 40% of micro and fine dust has been found to be free between flocks and fibers, 20%–30% to be loosely bound, and

the remaining 20%–30% to be securely bonded to the fibers. Processing allows a combination of dust to be released. Working cycles, adopted machine inventories, and room air conditions are the primary causes of this. Typically, organic elements are derived from the cotton plant's leaves, stalks, or seed pods. Sandstorms and harvesting processes produce inorganic natural dust of mineral origin that sticks to the fibers. The three main factors that determine the amount of natural dust in raw cotton purchased are

- a. the cultivation area,
- b. the fiber's maturity, and
- c. the harvesting technique.

Particles of dust fall more slowly. As a result, they have the ability to stay in the air for extended periods of time and travel great distances on wind. The following is a list of the issues that dust causes are the staff is under further stress as a result. It's unpleasant to breathe in dust. Similar to the nose and eyes, it can trigger allergies. Respiratory illnesses like byssinosis may result from it. Dust deposits are an environmental concern. Dust buildup that can get inside of machinery. Loading the air conditioning apparatus. Impact on goods Pressurization of machines can lead to a direct or indirect quality defect. Operational disturbance is caused by dust buildup. Blocking and exhausting the truth. Roughness of yarn has increased. Wear on machine parts (such as rotors) occurring more quickly. The working conditions in conventional spinning mills are typically dusty and unclean in places like the mixing room, blow room, carding, Weaving and Packing combing department. In typical mills, cotton dust in these locations ranges from 40 mg/m³ to 50 mg/m³. Other departments do include cotton dust; however, the concentrations range from 1 to 8 mg/m³.the problem of health diseases as.



Table 8 Human Health Problems

| S. No | Health Problems | No of Respondents | Percentage |
|-------|---------------------|-------------------|--------------|
| 1 | Eye side | 30 | 13.00% |
| 2 | Byssinosis | 55 | 23.91% |
| 3 | Lung Disease | 46 | 20% |
| 4 | Dry Cough | 39 | 16.97% |
| 5 | Toxic Liver Disease | 12 | 5.22% |
| 6 | Skin Problem | 05 | 2.17% |
| 7 | Heart Problem | 08 | 3.49% |
| 8 | Hearing Problem | 35 | 15.24% |
| | Total | 230 | 100 % |

According to the numbers above, the most prevalent health issue among textile industry workers. 13 % have eye problems. 23.91% of the illnesses caused by byssinosis are present. 20% of workers have lung disease. 16.97% Other workers are being bothered by a dry cough and cold. In addition to 2.17 workers' skin issues, 5.22 workers are impacted by toxic liver illness. 3. 49 People suffer from cardiac issues. 15.24% of workers have hearing impairments. Byssinosis may result by breathing in dust from raw cotton. The majority of those who work in the textile business have it. Individuals who are sensitive to dust may experience symptoms similar to asthma after being exposed. Byssinosis is still widespread in underdeveloped nations. This disease is more likely to occur among smokers. Long-term (chronic) lung illness can be brought on by frequent dust exposure, shown in Table 8.

7. Recommendation

1. Improving occupational health through performing safety performance evaluations and health and safety assessment series for field employees.
2. Keep an eye on employees' health and wellness at regular checkups. This will help identify occupational hazards early on.
3. Stressing the value and efficiency of personal protective equipment in order to encourage fitness and provide first aid with accuracy. Workers via initiatives to promote health.

4. Professionals should create and implement health education initiatives. to educate employees about the negative consequences of health nurses.
5. The risks to one's health at work, the value of training courses, and the usage of the proper personal protective equipment.

Conclusion

Workers were exposed to cotton dust in the overall working conditions and environment that were noted. As a result, it was found that the working environment had low indoor air quality. There was no formal housekeeping program in place, and the workplace was extremely dusty. Additionally, the majority of the data collectors noticed that the workers' eyes, eyebrows, hair, nostrils, and clothing were covered in dust particles when they suddenly sneezed upon entering the textile businesses. The inadequate design and placement of the working units resulted in air flow restriction to the various working units even though there were natural ventilation systems (doors, windows, and other openings). The mechanical ventilation systems in the working units were not operational. The operating units were dimly lighted as well. We saw that every working unit lacked safety teaching procedures and warning indicators. It was also discovered that not every worker wore face shields, respirators, or other personal protective equipment (PPE) to reduce exposure to cotton dust.

Reference

- [1]. Tanweer Islam (2022) Health Concerns of Textile Workers and Associated Community Published online 2022 May 23. doi: 10.1177/00469580221088626
- [2]. Naureen Akber Ali, 1,* Asaad Ahmed Nafees, 2 Zafar Fatmi, 2 and Syed Iqbal Azam 2 (2018)Dose-response of Cotton Dust Exposure with Lung Function among Textile Workers: MultiTex Study in Karachi, Pakistan Int J Occup Environ Med. 2018 Jul; 9(3): 120–128.Published online 2018 Jul 1. doi: 10.15171/ijoem.2018.1191
- [3]. Abera Kumie, Magne Bråtveit, Wakgari Deressa, Samson Wakuma, Bente E. Moen (Jun 21,2020) Personal cotton dust exposure in spinning and weaving sections of a textile



- factory, north Ethiopia Issue Vol. 34 No. 2 (2020).
- [4]. S M Kennedy, D C Christiani, E A Eisen, D H Wegman, I A Greaves, S A Olenchok, T T Ye, P L Lu (1987) Cotton dust and endotoxin exposure-response relationships in cotton textile workers PMID: 3800146 DOI: 10.1164/arrd.1987.135.1.194
- [5]. Henry W. Glindmeyer, John J. Lefante , Robert N. Jones , Roy J. Rando , Hassan M. Abdel Kader , and Hans (1991) Weill Exposure-related Declines in the Lung function of Cotton Textile Workers: Relationship to Current Workplace Standards https://doi.org/10.1164/ajrccm/144.3_Pt_1.675 PubMed: 1892310.
- [6]. Sintayehu Daba Wami, Daniel Haile Chercos, Awrajaw Dessie, Zemichael Gizaw, Atalay Getachew, Tesfaye Hambisa, Tadesse Guadu, Dawit Getachew & Bikes Destaw (2018) Cotton dust exposure and self-reported respiratory symptoms among textile factory workers in Northwest Ethiopia: a comparative cross-sectional study Journal of Occupational Medicine and Toxicology volume 13, Article number: 13 (2018).
- [7]. Antoine Vikkey Hinson, Virgil K Lokossou, Vivi Schlunssen, Gildas Agodokpessi, Torben Sigsgaard, Benjamin Fayomi (2016) Cotton dust exposure and respiratory disorders textile workers at a textile company in the southern part of Benin International Journal of Environmental Research and Public Health volume 13 ISSN 1661-7827.
- [8]. Asaad Ahmed Nafees, Zafar Fatmi (8-1-2016) Available interventions for prevention of cotton dust-associated lung diseases among textile workers lung diseases among textile work Journal of the College of Physicians and Surgeons Pakistan 2016, Vol. 26(8): 685-691.

آزادی کے بعد اردو افسانہ

ڈاکٹر شاہینہ پوین محمد الیاس صدیقی

اسٹنٹ پروفیسر، شعبہ اردو و فارسی، ایم ایس جی آرٹس، سائنس و کامرس کالج، مایاؤں (کیمپ)، سک، مہاراشٹر۔ ا۔

آزادی کے بعد اردو افسانہ کا تیسرا دور شروع ہوتا ہے۔ آزادی سے پہلے اردو افسانے کا دائرہ تکنیک اور موضوع کے لحاظ سے کافی وسیع ہو چکا تھا اور اردو افسانہ اپنے عروج پر تھا۔ ہندوستان آزاد ہونے سے تو نئی امنگیں لانے کے بجائے یہ آزادی ہندوستان کا نقشہ بدل دیتی ہے۔ ملک دو حصوں میں تقسیم ہو جاتا ہے اور ہجرت کا واقعہ پیش آتا ہے۔ اس تقسیم سے جو مسائل سامنے آئے اس نے ملک کے لوگوں کی آرزوں کو چور کر دیا۔ آزادی تو ملی لیکن وہ آزادی ملک کی لوگوں کے لیے خوشیاں نہ لاسکی۔ آزادی ملتے ہی اور ملک تقسیم ہوتے ہی ملک میں ہر طرف فسادات کی آگ بھڑک اٹھی۔ انوں کا قتل عام ہوا، عورتوں کو اغوا کیا، ان کی عزتیں لوٹی گئیں اور ہزاروں گھر تباہ ہو گئے۔ ان حالات نے افسانہ نگاروں کے ذہن اور ضمیر کو بھی چھوڑ کر رکھ دیا۔ اس لیے اس وقت کے تقریباً تمام افسانہ نگاروں نے تقسیم ہند، فسادات اور پیدا شدہ مسائل کو اپنا موضوع بنایا ہے۔

اس وقت پورا ملک مذہبی تعصب اور فرقہ وارانہ منافرت میں پڑا ہوا تھا۔ ایسے میں فساد جیسے موضوعات پلکھنا یا قلم کار کے لیے بہت مشکل، صبر اور آزمائش کا کام تھا۔ اس وقت پورا ملک دو فرقوں میں بٹا ہوا تھا۔ ایسے میں ایسا قلم کار کے لیے ان حالات کو موضوع بنا۔ سے ہی آزمائش تھی کیوں تو لکھنے والے ہندو، مسلم اور سکھ تینوں تھے اور سارے فرقے کے لوگوں نے اپنے علاقوں میں بے پناہ ظلم ڈھائے۔ اور ایسے فنکار بھی تھے جو فسادات اور ان حالات سے متاثر بھی ہوئے تھے۔ ان کا بھی کچھ۔ دہو چکا تھا لیکن اس کے وجود ان افسانہ نگاروں نے۔ فسادات پلکھنا شروع کیا تو انہوں نے عام انی نقطہ اختیار کیا اور جو کچھ بھی انہوں نے لکھا وہ ہندو، مسلم، سکھ کی حیثیت سے نہیں بلکہ عام اور دردمند ان کی حیثیت سے۔ ان افسانہ نگاروں نے ہر فرقے کے افراد کو یکساں طور پر ظالم اور مظلوم کو دکھایا اور دردمندی اور انی ہمدردی کا ثبوت پیش کیا ہے۔ ساتھ ہی امن و امان اور اتحاد کا پیغام دیا ہے۔

دیکھا جائے تو فسادات پلکھنے والے افسانہ نگار زیادہ ترقی پسند تھے۔ حالانکہ اس وقت کے تقریباً تمام افسانہ نگاروں نے چاہے ان کا تعلق ترقی پسند سے رہا ہو یا نہ رہا ہو تقسیم کے بعد کے واقعات اور فسادات کو موضوع بنایا۔ اور سبھی نے ایمان اری کا ثبوت بھی پیش کیا ہے۔ اس وقت جن افسانہ نگاروں نے تقسیم ہند، فسادات اور اس سے متعلق تمام واقعات کو اپنے افسانوں میں پیش کیا ہے ان میں کرشن چندر، منٹو، راجندر سنگھ بیدی، قرة العین حیدر، عصمت، عزیز احمد، احمد، یم قاسمی، ممتاز مفتی، سہیل عظیم آبادی، خواجہ احمد عباس، بیچہ مستور، ہا۔ مسرور، رام لعل، صالحہ عا۔ حسین اور انتظار حسین وغیرہ قابل ذکر ہیں۔

ان افسانہ نگاروں نے ظلم اور۔۔ کی مذمت کی اور جو کچھ لکھا وہ ان کی بقا کے لیے لکھا۔ انہوں نے کسی خاص فرقے کو ظالم نہیں دکھایا بلکہ انہوں نے توازن قائم رکھا۔ اس سلسلے میں کرشن چندر کا کامیاب افسانہ "پشاور ایکسپریس" قابل ذکر ہے جس میں دونوں ملکوں میں ہونے والے ظلم کو پاش اور متوازن طور پر دکھایا ہے۔ اس کے علاوہ افسانہ "جانور" اور "ہم وحشی ہیں" بھی اسی موضوع کے حامل ہیں۔ اسی طرح فسادات پلکھے گئے: کامیاب افسانوں میں منٹو کے "کھول دو، شریفین، ٹھڈا گوٹہ"، راجندر سنگھ بیدی کا لاجو، خواجہ احمد عباس کا انتقام، اجنتا، عزیز احمد کا کالی رات، ممتاز مفتی کا گھورا، ہیرا،

احمد: یم قاسمی کا میں ان ہوں، حیات اللہ ری کا شکر آرا نکھیں، ماں بیٹی، سہیل عظیم آدی کا اہم ہیارے میں ای کرن، عصمت چغتائی کا جڑیں اور قدرت اللہ شہاب کا یہ اوغیرہ افسانے کافی اہم ہیں۔ ان افسانہ نگاروں نے اپنے فکرو اور اسلوب کے ذریعہ فسادات کے مختلف پہلوؤں کو دکھانے کی کوشش کی ہے۔ کسی نے ان پر زور دیا ہے تو کسی نے ان کی حیوا کو دکھایا ہے۔ خاص طور سے عورتوں پر ہونے والے ہر طرح کے ظلم کو افسانوں میں پیش کیا ہے۔ اس سلسلے میں منٹو کا "کھول دو" اور قدرت اللہ شہاب کا "اہم" میں افسانے ہیں۔

فسادات سے متعلق ایسے افسانے بھی ہیں جن میں یہ دکھایا ہے کہ اس کی ریکی میں محبت اور کی روشنی بھی موجود تھی۔ یعنی ان فسادات میں کچھ ہندو، مسلم اور سکھ نے ای دوسرے کے لیے اور کی بقا کے لیے قربان بھی پیش کیں۔ اس سلسلے میں خواجہ احمد عباس نے سردار جی اور سہیل عظیم آدی نے اہم ہیارے میں ای کرن وغیرہ لکھ کر کی مثال پیش کی ہے۔

بہر حال اس طرح فسادات اور ہجرت پر بے شمار افسانے لکھے گئے اور یہ سلسلہ 1950ء چلتا رہا۔ یعنی تقریباً تین سال۔ اردو افسانے فسادات کا اثر رہا اور کچھ نہ کچھ لکھا۔ پھر یہ طوفان آرا اور اس کے اثرات پیدا ہونے شروع ہوئے تو افسانہ نگاروں نے فسادات کے واقعات کو موضوع بنانے کے بجائے اب انہوں نے اپنی آس کی زندگیوں پر ڈالی۔ آزادی کے بعد ان کی زندگی میں اور ملک میں بہت سی تبدیلیاں آچکی تھیں، ان تبدیلیوں کے ساتھ افسانہ نگاروں کے فکروں میں بھی تبدیلیاں آئی۔ آزادی سے پہلے لکھے والے افسانہ نگاروں میں منٹو، کرشن چندر، بیدی، عصمت، احمد یم قاسمی، حیات اللہ ری، سہیل عظیم آدی، قمر العین حیدر اور خواجہ احمد عباس وغیرہ اہم ہیں جن کے یہاں آزادی کے بعد فکروں دنوں میں تبدیلیاں آئی۔

سعادت حسن منٹو:

منٹو کے افسانوں کا مطالعہ کرنے سے پتہ چلتا ہے کہ آزادی کے بعد ان کے فکرو شعور میں بڑی تبدیلی آئی۔ منٹو سماج اور زندگی کی حقیقتوں کو موضوع بناتے ہیں۔ اس سلسلے میں آزادی سے پہلے ان کا اہم ازمنی آہ ہے اور وہ زندگی کی نیوں کو اور تلخ حقیقتوں کو بڑی بے کی سے پیش کرتے ہیں۔ آزادی کے بعد اسی موضوع کو وہ مثبت پہلو سے دیکھتے ہیں اور ان کے یہاں زندگی کا مثبت فلسفہ آہ ہے۔

کرشن چندر:

منٹو کی طرح کرشن چندر کے یہاں بھی ان کے تصور میں تبدیلی آئی ہے۔ خاص کر انہوں نے ان کے یہ دی مسائل پر ڈالی ہے۔ حالاً آزادی سے پہلے بھی انہوں نے ان کی دکھ درد، غم، معاشی تنگی اور معاشرتی مسائل کو موضوع بنایا ہے، لیکن آزادی کے بعد ان کے موضوع اور فن میں اور مضبوطی آئی۔ آزادی کے بعد ان کے یہ دی مسائل پر ڈالتے ہیں تو پتہ چلتا ہے کہ ان کے ان افسانوں میں اس قیاتی اور سانس دور میں بھی ہزاروں لاکھوں لوگ فٹ تھپتھپ بھوکے زندگی گزار رہے ہیں۔ اسی طرح اب وہ خواب بھی دکھاتے ہیں کہ کوئی غریب نہ ہوگا، کاراج ہوگا۔ کرشن چندر نے تکنیک کے بھی بہت تجربے کیے اور پلاٹ و کردار نگاری میں بھی آرا اختیار کیا۔

راجندر سنگھ بیدی:

اسی طرح راجندر سنگھ بیدی نے بھی ان کی زندگی کے مختلف پہلوؤں کو پیش کیا ہے۔ ان کے یہاں بھی آزادی کے بعد تبدیلی آئی ہے۔ آزادی کے بعد انہوں نے جنس نگاری کی طرف بھی اپنا رجحان بنایا لیکن وہ بہت احتیاط سے کام لیتے ہیں۔ بیدی کا خاص موضوع عورت کی زندگی ہے۔ وہ اس کے مختلف پہلوؤں کو دکھاتے ہیں۔ خاص کر انہوں نے عورت کی مظلومیت اور اس کے دکھ درد کو پیش کیا ہے۔ "اپنے دکھ مجھے دے دو" اس کی بہترین مثال ہے۔

عصمت چغتائی:

عصمت کے یہاں سماجی حقیقت نگاری کا میلان زیادہ آہ ہے۔ عصمت گھر مسائل اور گھر زندگی کے دکھ درد اور غموں کے بیان کے ذریعہ

پورے سماج اور معاشرے کی تصویر کشی کرتے ہیں۔ خاص کر ان کے افسانوں میں متوسط طبقہ آہے جو آزادی کے بعد معاشی تنگی سے دوچار ہوتا ہے۔ اس معاشی حالی کی وجہ سے گھر زنگی میں جو تلخیاں پیدا ہو گئی تھیں عصمت سے اپنا موضوع بنایا ہے۔ اس سلسلے میں افسانہ "چوتھی کا جوڑا" اس حقیقت نگاری کا کامیاب نمونہ ہے۔ اسی طرح انہوں نے سماج کے نچلے طبقے کی زنگی کے مسائل کو بھی موضوع بنایا ہے۔ اس سلسلے میں افسانہ "دو ہاتھ" قابل ذکر ہے۔

اختر اورینوی:

اسی طرح اختر اورینوی نے آزادی کے بعد انی زنگی کے مختلف مسائل کو پیش کیا ہے۔ ان کے یہاں فکر و فن میں زیادہ تبدیلیاں آتی ہیں۔ انہوں نے علامت نگاری سے بھی کام لیا ہے جس میں انہیں حد درجہ کامیابی ملی۔ "سپنوں کے دلیں میں" ان کا بہترین افسانوی مجموعہ ہے۔

احمد یم قاسمی:

احمد یم قاسمی نے آزادی کے بعد کے مختلف حالات و مسائل کو پیش کیا ہے۔ خاص کر انہوں نے تہذیب، ذہنی اور معاشرتی انتہا رکھنے والے لوگوں کا رانہ طور پر پیش کیا ہے۔ قرۃ العین حیدر نے ہندوستان کی مشترکہ تہذیبی روایہ کو بھی موضوع بنایا ہے جو آزادی کے بعد منتشر آتی ہے۔ اور اس کی وجہ سے ان جس ذہنی انتہا کا شکار ہوا اسے دکھانے کی کوشش کی ہے۔ تقسیم ہند کے بعد دونوں ملکوں کے لوگوں کے رما یوسی اور امیدیں پیدا ہو گئی تھیں۔ لوگوں کے انتہائی اور اجنبی پن کا احساس پیدا ہو چکا تھا۔ قرۃ العین حیدر اس کی وجہ سے پیدا ہونے والے درد و کرب کو دکھایا ہے۔

انتظار حسین:

انتظار حسین نے بھی اسی تہذیب کے لیے کو دکھایا ہے۔ ان کے دیہاتوں میں تو دور رہ حاصل کی جاسکتی ہیں لیکن تقسیم ہند نے جس تہذیب ورشہ سے محروم کر دیا وہ دورہ ملنا مشکل ہے۔ انہوں نے مشترکہ تہذیب کے بکھرنے کا ماتم بہت درد بھرے آڑ میں کیا ہے۔ اسی طرح اس وقت کے افسانہ نگاروں کے یہاں بھی موضوع اور تکنیک کے نئے تجربے ملتے ہیں جن کے ذریعہ اردو افسانے کی روایہ میں وسعت پیدا ہوئی۔

نئی کے افسانہ نگار:

اس کے بعد جو نئی اردو افسانہ نگاری میں قدم رتے ہے اس میں واہتسم، جیلانی، نو، شوہر، صدیقی، اشفاق احمد اور قاضی عبدالستار وغیرہ اہم ہیں۔ ان افسانہ نگاروں نے اردو افسانے میں نئے نئے گوشے نکالے اور تکنیک کے بھی نئے نئے تجربے کے ذریعہ اردو افسانہ نگاری کی روایہ میں اضافہ کیا۔ ان افسانہ نگاروں نے بھی حقیقت نگاری سے کام لیا ہے۔ انہوں نے انی ذہن کے انتہائی راور لوگوں کی نفسیاتی الجھنوں کے ساتھ سماجی، معاشرتی، علاقائی اور گھر زنگی کے بے شمار مسائل کو موضوع بنایا ہے۔ انہوں نے منفرد اسلوب اور فنی تجربے کا بھی سہارا لیا ہے۔ پھر آگے چل کر علامتی اور تجربی افسانے کا رجحان بھی بڑھا اور اسے پوان بھی پڑھایا۔ اس طرح آج بھی اردو افسانے میں نئے نئے مسائل اور موضوعات کو شامل کر کے اس کے دامن کو وسیع کیا جا رہا ہے۔ ساتھ ہی نئے فنی تجربے بھی ہو رہے ہیں۔ آج افسانہ نگاروں کی ایہی تعداد ہے جو وقت کے تقاضوں کے مد مختلف حقیقتوں کو سامنے لانے کی کوشش کر رہے ہیں۔

